सर्वपल्ली राधाकृष्णन एवं रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन

योगेश कुमार पाल

प्रदीप कुमार

वर्तमान की आवश्यकता बालक के व्यक्तित्व का सन्तुलित विकास करने से है जिसके लिये राधाकृष्णन एवं रविन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचार महत्वपूर्ण हैं उनके दर्शन में मानव की सभी समस्याओं एवं दुःखों का समाधान निहित है। राधाकृष्णन एवं रविन्द्रनाथ टैगोर द्वारा जीवन दर्शन एवं शैक्षिक दर्शन के सम्बन्ध में दिये गये विचार वर्तमान समय में शैक्षिक जगत् एवं जीवन की विभिन्न समस्याओं के समाधान में सहायक हैं वर्तमान समय मे केन्द्रित मानवीय क्रियाये मानव को मानव मूल्यो से दूर कर रही हैं शिक्षा का व्यावसायीकरण किया जा रहा है। जिसमें मनुष्य के केवल एक भौतिक पक्ष के विकास पर बल दिया जा रहा है। अतः आज शिक्षा अपने वास्तविक उद्देश्यों कों प्राप्त करने में असफल है क्योकि बालक के सर्वांगीण विकास के लिये उनके भौतिक पक्ष के साथ–साथ आध्यात्मिक पक्ष का भी विकास अति आवश्यक है इसके लिये दर्शनशास्त्र, अध्यात्मशास्त्र, नीतिशास्त्र के अध्ययन को भी आवश्यक माना जाये। राधाकृष्णन एवं रवीन्द्रनाथ टैगोर ने शिक्षा को अन्तिम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति में सहायक माना है राधाकृष्णन एवं रवीन्द्रनाथ टैगोर दोनो विद्वानों ने शिक्षा को शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक तथा मानसिक विकास के लिए आवश्यक मानते हैं इसके द्वारा बालक में **विश्वबन्धुत्व** एवं **राष्ट्र प्रेम** की भावना का विकास होता है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों में आत्मनिर्णय और आत्मानुशासन की क्षमता होनी चाहिए। यह गुण शिक्षा के द्वारा ही विकसित किये जा सकते हैं। शिक्षा की प्रक्रिया में स्वतन्त्र प्रयत्न एवं चिन्तन होना चाहिए, साथ ही इसमें क्रियाशीलता, रचना, सृजन, आनन्द, जिज्ञासा और रूचि का भी प्रयोग होना चाहिए। इन सभी तथ्यों को अपनाने से शिक्षण विधि प्रभावशाली हो सकती है इस प्रकार इन सब शिक्षा सम्बन्धी विचारों पर शोध कार्य आधारित है।